पुलिस को न मिली दिवाली की....

पेज एक का शेष

ऐसे मौकों पर एसएचओ ही जाया करते हैं न कि एसीपी। कुल मिलाकर उन्होंने पूरी वारदात से अनभिज्ञता जाहिर की।

कहने को तो कहा जा सकता है कि मामला निपट गया परन्तु वास्तव में निपटा नही है। इस मामले से पुलिस की जो फजीहत हुई है, उसकी वैधानिकता पर जो प्रहार हुआ है, उसके वकार को जो क्षति पहुंची है, वह पूरी कानून व्यवस्था के लिए घातक है। पुलिसकर्मियों की नालायकी के चलते सही पुलिसकर्मियों को भी अपनी वैधानिक डयूटी करने में कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा।

यहां प्रश्न यह भी पैदा होता है कि पीसीआर वालों को जरूरत क्या थी कि वे दुकानदार से उलझे? जब नगर निगम तह बाजारी वसूल रहा है, दुकानें बंद करने का कोई समय निर्धारित नहीं किया गया है तो पुलिसकर्मियों को जरूरत क्या थी पंगा लेने की? समझा जा सकता है कि वह अपने निहित स्वार्थ की पूर्ति यानी दिवाली के नाम की वसूली करने के इरादे से पहुंचे थे।

यहां गौरतलब बात यह भी है कि यदि दुकानों का सड़क तक बढ़ना या एक निश्चित समय बाद तक खोलना गलत है तो इसे दुरुस्त करने का कोई सही तरीका भी हो सकता है। प्रशासन बाकायदा इसकी विधिवत घोषणा करे और उसे व्यवस्थित व सुदृढ़ तरीक से लागू कराये न कि इस तरह से जैसे उक्त पीसीआर वालों ने किया। पुलिस का आये दिन इस तरह पिटना समाज को अराजकता की ओर ले जा रहा है। यदि समय रहते पुलिस कर्मियों की कार्यशैली एवं व्यवहार में यदि आवश्यक परिवर्तन न किये गये तो कल तक बहुत देर हो चुकी होगी।

FASHION.IN

Available all types of ladies cotton kurties, Fancy Kurties, Jegin, legin, Fancy Top, T-Shirts, Trousers and imported material in wholesale price.

SPECIALITY IN FANCY TOP & FANCY KURTIES

लेडीज कपड़ों पर भारी छूट

एक बार सेवा का मौका अवश्य दें।

Address : 5M/22, N.I.T. FARIDABAD NEAR DAYANAND WOMEN COLLEGE, ST. JOSEPH CONVENT SCHOOL ROAD . 9911489490

पीसीआर पुलिसकर्मियों का अशोभनीय धंधा

सैक्टर-7 स्थित चार बैंकों के सामने एक पीसीआर खड़ी होती है। कहने को तो यह नागरिक सुरक्षा के लिए है। परन्तु ये लोग बैंक वालों के लिए ही परेशानी का कारण बने हुए हैं। एक मैनेजर ने बताया कि दिवाली के मौके पर हर ग्राहक पर गिद्ध दृष्टि रखते हैं। कोई मिठाई आदि का डिब्बा लेकर आये तो उसे चैक करने के नाम पर खुलवा लेंगे, फिर कहेंगे, हमारी दिवाली कहा है? हम भी तो आपकी सेवा में रात-दिन यहां खड़े रहते हैं।

एक सिपाही तो ऐसा है कि किसी भी सुन्दर सी लडकी को बैंक में जाते देखकर उसके पीछे-पीछे घूरता हुआ बैंक के भीतर जा बैठेगा और तब तक बैठा रहेगा जब तक वह लडकी वहां रहेगी। इसी से तंग आकर एक कैजुअल महिला कर्मचारी तो काम ही छोड़ गयी। पूछने पर मैनेजर ने बताया कि हम यदि उनकी कम्पलेंट करने लगे तो फिर हम तो उलझ कर रह जायेंगे। इनका तो कुछ बिगडना नहीं, दुश्मनी और बढ़ जायेगी। ऐसे में कौन पंगा ले इन पुलिस वालो से? न इनकी दोस्ती अच्छी न दुश्मनी।

पुलिस व समाज के रिश्ते का यह एक उदाहरण मात्र है। जिस समाज से पुलिस सहयोग की अपेक्षा करती है, यदि उसकी सोच ऐसी होगी तो वह क्या सहयोग करेगा? इसमें दो राय नहीं कि सभी पुलिसकर्मी गंदे नहीं होते लेकिन महकमे की छवि का सत्यानाश करने के लिए चार-पांच ही काफी होते है। हां, यदि समय रहते उन्हें दुरुस्त न किया जाये तो छूत की बीमारी की तरह शीघ्र ही अच्छे कर्मी भी गंदे होने लगते हैं।

सुधी पाठकों से अपील

31 वर्षों से 'मज़दूर मोर्चा' वैकल्पिक मीडिया के तौर पर अपने सुधी पाठकों को वह समाचार, विचार एवं जन उपयोगी सामग्री प्रस्तुत करता आ रहा है जिसे अन्य मीडिया छिपाने का प्रयास करता है। सुधी पाठक इतना तो समझ ही गये होंगे कि यह छोटा सा अखबार किसी भी राजनीतिक अथवा व्यवसायिक धड़े से जुड़ा नहीं है। जनहित में जो भी प्रकाशित करने लायक सामग्री हो पाती है उसे लोग़ों तक पहुंचाने का प्रयास किया जाता है।

बिना विज्ञापनों के, केवल पाठकों के सहयोग से चलने वाला यह छोटा सा अखबार आपको और अधिक बेहतर व निरंतर सेवा देता रहे इसके लिये आप से निवेदन है कि इसमें अपना आर्थिक सहयोग अवश्य प्रदान करें। 'मज़दूर मोर्चा' नियमित रूप से खरीदकर पढ़ने वाले पाठक तो अपना योगदान दे ही रहे हैं, इलेक्ट्रोनिक माध्यम से अखबार पढ़ने वाले पाठकों से विशेष अनुरोध है कि वे भी इसमें अपना आर्थिक सहयोग प्रदान करें। वार्षिक सहयोग के तौर पर 100,500 रुपये 1000 रुपये की धनराशि सामर्थ्य अनुसार 'मज़दूर मोर्चा' के निम्नलिखित खाते में डाले जा सकते हैं।

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की किसी भी शाखा में
खाता संख्या : 451102010004150
IFSC CODE : UBIN0545112

घर बैठे प्राप्त करें मज़दूर मोर्चा

आज ही अपने हॉकर से कहें कोई दिक्कत हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लभगढ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें:

अन्य बिक्री केन्द्र :

1. आनंद मैगजीन सैंटर केसी रोड, एनएच-5
2. प्रिंट फोर्ट, टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड
3. रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन
4. एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे
5. राम खिलावन बल्लबगढ़ बस अड्डा पुलिस चौकी के सामने
6. हितेश ग्रोवर सैक्टर 29 पेट्रोल पम्प के पास
7. जितेन्द्र, बाटा सैंटर - 9971064207

गतांक की चीर-फ़ाड़

स्टैच्यू ऑफ यूनिटी

डॉ. जुगल किशोर गुप्ता

मज़दूर मोर्चा के 04 नवम्बर-10 नवम्बर 2018 के अंक में ऐतिहासिक, राजनीतिक, प्रशासनिक, आर्थिक व साहित्यिक महत्पूर्ण मुद्दों पर अनेक समाचार प्रकाशित हुए है। मोदी जी इस पत्र का भी वाचन करना! देश की एकता कौन बनायेगा में महात्मा गांधी की हत्या के बाद राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (आरएसएस) पर लगे प्रतिबंध के पश्चात् संघ के सरसंघचालक गोलवलकर द्वारा सरकार को लिखे पत्र के जवाब में तत्कालीन उप-प्रधानमंत्री एवम् गृहमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल द्वारा लिखे खत के माध्यम से पटेल के संघ और देश की एकता के बारे में विचारों से पाठकों को जागरूक करने का सराहनीय कार्य किया गया है। पटेल के विचार कि संघ के लोग देश की सत्ताधारी पार्टी कांग्रेस पर सारी मर्यादा को ताक पर रखकर हमले करते हैं, देश में अस्थिरता का माहौल पैदा करने की कोशिश करते हैं तथा संघ के लोगों के भाषण में साम्प्रदायिकता का गटर भरा होता है और हिन्दुओं की रक्षा के नाम पर अनावश्यक नफरत फैलाते हैं। संघ के बारे में पटेल के ये विचार आज भी प्रासंगिक हैं।

स्वतन्त्रता आंदोलन के दौरान आरएसएस ने अंग्रेज शासकों से विरूद्ध किसी भी गतिविधि व आंदोलन में भाग नहीं लिया। स्वतन्त्रता के बाद संघ की राजनीतिक इकाई पूर्व जनसंघ तथा भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने कांग्रेस व इसके स्वतन्त्रता सेनानियों विशेषकर पूर्व प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू के योगदान की उपेक्षा करते हुए भगत सिंह, सरदार पटेल, डा. बी.आर. अम्बेडकर आदि को देश के आइकॉन्स के रूप में पेश करने की कोशिश की, जबकि उनकी विचारधारा से उनका कोई सरोकार नहीं था। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी संघ के प्रचारक रहे हैं तथा संघ की पाठशाला से ही शिक्षित व प्रशिक्षित होकर निकले हैं ने स्टैच्यू ऑफ यूनिटी बनाकर अपने आपको जनता के सामने पटेल का वारिस दिखाने का प्रयास किया है, जिसका स्टैच्यू ऑफ यूनिटी-राजनीतिक विरासत की जंग में सटीक विश्लेषण किया गया है। असल में सरदार पटेल की गांधीवादी विचारधारा से मोदीजी का कोई लेना देना नहीं है और न ही कोई लगाव है। उनका एकमात्र मकसद संसार की सबसे बड़ी प्रतिमा बनाकर अपने कद को उंचा करना है।

प्रधानमंत्री मोदी अपने आपको विश्व के सामने अमेरिका और राष्ट्रपति ट्रंप के समकक्ष दिखाना चाहते हैं। इसलिए अमेरिका की स्टैच्यू ऑफ लिबर्टी की नकल करते हुए पटेल की 182 मीटर उंची प्रतिमा का नाम स्टैच्यू ऑफ यूनिटी रखा जिसकी सरदार पटेल की सबसे उंची मूर्ति और नकली वृत्ति की वैचारिक दरिद्रता में समीक्षा की गई है। गौरतलब है जिस स्थान पर यह स्मारक बना है वहां के 72 गांवों के विस्थापित किसान और आदिवासी इस परियोजना के भारी खर्च और अपने पुर्नवास के लिए लिए, काफी समय से विरोध कर रहे थे और जब 31 अक्टूबर को मोदीजी ने इस स्मारक का अनावरण किया तब इन गांवों के लोगों ने प्रतिरोध स्वरूप अपने सिर का मुंडन करवाया और किसी के भी घर में उस दिन खाना नहीं बना। लेकिन मोदीजी पर इस प्रतिरोध का कोई असर नहीं हुआ।

इसे प्रायश्चित कहूं या पाखंड? में सरदार पटेल व संघ परिवार के बीच विचारों में विरोधाभास को उजगार किया गया है। एक तरफ मोदी जी गुजरात में सरदार पटेल के विशाल स्मारक का अनावरण कर रहे थे तो दूसरी तरफ 1946 में संघ प्रकाशित पत्रिका में एक कार्टून में रावण के रूप में चित्रित दस चेहरों में सरदार पटेल भी थे जिन पर संघी श्यामा प्रसाद मुखर्जी व वीडी सावरकर तीर चलाकर दहन करने को तैयार थे। यह संघ परिवार के लोगों के चरित्र और विचारों में अवसरवादिता और विरोधाभास की पराकाष्ठा है।

"सरदार पटेल और भारत विभाजन" में सरदार पटेल की अध्यक्षता में आयोजित अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की ऐतिहासिक मीटिंग का खुलासा किया गया है जिसमें भारत विभाजन संबंधी प्रस्ताव के समर्थन के लिए मौलाना अब्दुल कलाम आजाद के अनुसार सरदार पटेल ने महात्मा गांधी और पंडित नेहरू को मनाया तथा अपने अध्यक्षीय भाषण देते हुए पटेल ने न केवल पाकिस्तान के प्रस्ताव का समर्थन किया बल्कि उसके पीछे की टू नेशन थियरी को भी अप्रत्यक्ष रूप से स्वीकृति दी। इतिहास के विद्यार्थियों व इतिहास में रुचि रखने वाले पाठकों के लिए भारत विभाजन प्रस्ताव पर पटेल की भूमिका के बारे में जानकारी अति महत्वपूर्ण है।

बिहार के आरा में 26 अक्टूबर को आयोजित किसान रैली में किसान नेताओं ने मोदी सरकार द्वारा किसानों के हितों के नाम पर बनाए गए कानूनों और उनकी दशा में किए गए सुधारों के दावों और खेती-किसानों की असली दशा की तुलना करते हुए "कृषि क्षेत्र में एकजुटता बिहार में - कम्यूनिस्टों ने संभाल रखी है कमान, बाकी राजनीतिक दलों का भी समर्थन" बिहार और यूपी में हुए किसान आंदोलन और बिहार में आरा के किसान सम्मेलन में उभरी कृषक समस्याओं की चर्चा की गई है। स्पष्ट है कि अब किसानों का मुद्दा ज्यादा मुखर हो गया है।

"हरियाणा रोडवेज कर्मचारियों का आंदोलन कई मायनों में अभूतपूर्व बन गया " में हरियाणा रोडवेज कर्मचारियों की हड़ताल के कारणों से अवगत कराया गया है कि उनका यह आंदोलन वेतन बढ़ाने या बोनस के लिए नहीं बल्कि हरियाणा रोडवेज को निजीकरण से बचाने के लिए है। सरकार जानबूझकर इस सरकारी परिवहन व्यवस्था को बर्बाद करने पर तुली हुई है। खट्टर सरकार द्वारा इसकी गंभीरता का कोई संज्ञान न लेने पर जनता की बढती समस्या के मद्देनजर पंजाब हरियाणा हाईकोर्ट द्वारा दबाव देने पर कर्मचारियों ने अपनी हड़ताल वापिस ले ली थी लेकिन खट्टर सरकार ने न तो निजी मालिकों को प्राईवेट बसें चलाने के लिए दिए गए परमिट अभी रद्द किए हैं और न ही हडताली कर्मचारियों के विरुद्ध की गई दमनात्मक कार्यवाही वापिस ली है।

"सीबीआई के बाद आरबीआई में कोलाहल" में सीबीआई बनाम सीबीआई तथा आरबीआई बनाम सरकार के बीच छिड़े घमासान का खुलासा किया गया है कि लोकतंत्र में संस्थाओं को चलाने का उत्तरदायित्व प्रशासकों पर होता है, जिनकी विचारधारा में संवैधानिक मूल्यों की जानकारी मजबूत होनी चाहिए। स्पष्ट है कि जो प्रशासक संविधान को नहीं जानता वह देश को क्या खाक चलायेगा।

सुप्रीम कोर्ट द्वारा सबरीमाला मंदिर मामले में दिए फैसले के संदर्भ में भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह द्वारा सुप्रीम कोर्ट को निर्देश देने पर अदालत वही फैसले सुनाए जिनका पालन हो सके, अमित शाह....आर्डर....आर्डर, प्रधानमंत्री मोदी द्वारा अच्छे दिन आने के झूठे आश्वासन पर यहां से भी अच्छे दिन नजर नहीं आ रहे! संघ की पत्रिका में रावण के रूप में चित्रित गांधी के दस चेहरों के बीच में सरदार पटेल पर भी श्यामा प्रसाद मुखर्जी तथा वीडी सावरकर द्वारा तीर चलाकर रावण दहन करने के लिए लक्ष्य भेदने पर इसे प्रायश्चित कहूं या पाखंड? तथा मोदी सरकार द्वारा चुनाव आयोग, सीबीआई, आरबीआई, यूजीसी व न्यायपालिका में अनावश्यक हस्तक्षेप करने व स्टैच्यू ऑफ यूनिटी स्थापित करने पर स्टैच्यू, स्टैच्यू , ईसी, सीबीआई, आरबीआई, यूजीसी व जुडिशरी, कार्टूनों द्वारा उपयुक्त कटाक्ष किया गया है।